# चार्वाक दर्शन की ज्ञानमीमांसा

## Charvaka's Epistemology Or Theory of Perception

चार्वाक के अनुसार ज्ञानप्राप्ति का एकमात्र साधन प्रत्यक्ष है। प्रत्यक्ष (perception) शब्द से तात्पर्य है (प्रति + अक्ष) आँखों के सामने। अर्थात् ज्ञानेन्द्रियों एवं वस्तुओं के संयोग से प्राप्त ज्ञान को प्रत्यक्ष कहते हैं। प्रत्यक्ष प्रमाण यथार्थ ज्ञान की प्राप्ति के लिए इन्द्रियों को साधन मानता है। इस प्रकार से वही ज्ञान सत्य है जो हमें इन्द्रियों से प्राप्त होता है।

ज्ञानेन्द्रियाँ छः हैं — आँख, कान, नाक, जीभ, त्वचा और मन। इसको हम उदाहरण के रूप में समझ सकते हैं — जब आँख का संयोग आम के साथ होता है, तब हमें उसके गोल एवं लाल होने का जो ज्ञान मिलता है, वही प्रत्यक्ष है। इसलिए चार्वाक 'प्रत्यक्ष' को ही एकमात्र ज्ञानप्राप्ति का साधन मानते हैं - 'प्रत्यक्षमेवैकं प्रमाणम्'

**प्रत्यक्ष के प्रकार :→** वैसे चार्वाक केवल पाँच ज्ञानेन्द्रियों तक ही प्रत्यक्ष को सीमित नहीं रखता है। वह मन को भी स्वीकार करता है, क्योंकि मन सुख-दुःख आदि की स्पष्ट अनुभूति करता है। इस प्रकार से प्रत्यक्ष का यहाँ पर दो प्रकार बताया गया है — (i) बाह्य प्रत्यक्ष (इन्द्रियों के द्वारा), (ii) मानस प्रत्यक्ष (मन द्वारा)।

**अन्य प्रमाणों की आलोचना :→** चार्वाक प्रत्यक्ष को एकमात्र प्रमाण बताकर अन्य प्रमाण (अनुमान, शब्द आदि) का खण्डन करता है। यहाँ अनुमान और शब्द के विरुद्ध लाए गए चार्वाक के तर्कों पर प्रकाश डालेंगे।

**अनुमान प्रमाण :→** अनुमान (अनु + मान) पाश्चात्य ज्ञान है। अर्थात् (पूर्वज्ञान) पूर्व में किए गए प्रत्यक्ष के आधार पर हम कल्पना के द्वारा वर्तमान में किसी सत्य की उपलब्धि करते हैं, वह प्रमाण अनुमान कहलाता है। इस तरह से अनुमान प्रत्यक्ष पर आधारित ज्ञान है। परंतु चार्वाक दर्शन इस प्रमाण की अनेक प्रकार से आलोचना करता है। मुख्य रूप से उसका प्रहार अनुमान प्रमाण के केन्द्रिय बिंदु 'व्याप्ति-सम्बन्ध' पर है। जो निम्नवत् है —

## व्याप्ति-सम्बन्ध की आलोचना :→

अनुमान का आधार व्याप्ति है। व्याप्ति से दो वस्तुओं के आपसी सम्बन्ध का ज्ञान होता है। अर्थात् हेतु और साध्य के नियत साहचर्य ही 'व्याप्ति' है। जैसे- पर्वत के पीछे से उठते धुएँ को देख कर पर्वत में आग होने का अनुमान होता है। आग को प्रत्यक्ष न देखते हुए भी हम उठते धुएँ को देखकर आग का अनुमान इसलिए करते हैं क्योंकि धुएँ और आग में विशेष सम्बन्ध होता है। इस विशेष संबंध को ही व्याप्ति-सम्बन्ध कहते हैं।

लेकिन चार्वाक दर्शन में इस सम्बंध की निम्नलिखित तर्कों द्वारा आलोचना की गई है —

(i)→ व्याप्ति का ज्ञान कभी भी संदेह से परे नहीं होता। पहली बात तो हम सर्वत्र व्याप्ति सम्बन्ध का प्रत्यक्ष नहीं कर सकते। धुएं और आग में सर्वत्र ही व्याप्ति सम्बन्ध है, हम इसे बिना देखे नहीं कह सकते। दूसरी बात, व्याप्ति सम्बन्ध सर्वकाल में भी सिद्ध नहीं किया जा सकता। भूत एवं भविष्य के धुएँ और आग के मध्य व्याप्ति-सम्बन्ध में हम वर्तमान काल में कैसे कह सकते हैं?

(ii)→ अनुमान प्रमाण के समर्थक अनुमान की सिद्धि हेतु दो बातों की शर्तों का सहारा लेते हैं —

पहली बात → वस्तुओं का स्वभाव समान है, जैसे आग का स्वभाव गरम रहना है तो सामान्य परिस्थितियों में वह हमेशा गरम रहेगी। इसी तरह धुएँ का स्वभाव हमेशा आग के साथ रहना है, तो वह हमेशा के साथ ही रहेगा। अतः हम धुएँ को देखकर आग का अनुमान कर सकते हैं।

दूसरी बात → जगत् में कार्य-कारण का नियम कार्यरत है। इसका मत- लब यह हुआ कि प्रत्येक वस्तु या घटना का कोई-न-कोई कारण अवश्य होता है, जैसे उक्त उदाहरण में धुएँ का कारण आग है।

यहाँ पर चार्वाक दर्शन की मुख्य आपत्ति यह है कि व्याप्ति-सम्बन्ध (जो कि विशेष न होकर एक सामान्य वाक्य होता है) की स्थापना के लिए अनुमान प्रमाण के समर्थक जिस स्वभाववाद और कार्य-कारण सिद्धांत का सहारा लेते हैं, वह भी तो सामान्य

वाक्य ही होते हैं, जो अनुमान के आधार पर स्थापित किये जाते हैं। इसका तात्पर्य यह हुआ कि एक सामान्य वाक्य की स्थापना के लिए वे दूसरे सामान्य वाक्य को प्रस्तुत करते हैं। किंतु यह तो चक्र में घुमना हुआ। तर्कशास्त्र में इसे 'पुनरावृत्ति दोष' कहा जाता है।

(iii) → यहाँ अनुमान प्रमाण के समर्थक कह सकते हैं कि संसार में कुछ निश्चित सर्वव्यापक नियम अवश्य है, तभी तो समान सांसारिक वस्तुओं में नियमितता पायी जाती है। जैसे आग का गर्म रहना एवं जल का शीतल रहना। इसके उत्तर में चार्वाक कहता है कि यह सब वस्तुओं का स्वभाव है, जो जरूरी नहीं कि हमेशा एक सा बना रहे।

(iv) → चार्वाक दर्शन सामान्य का अस्तित्व इसलिए भी स्वीकार नहीं करता क्योंकि वह किन्हीं भी दो वस्तुओं को समान नहीं मानता।

(v) → अनुमान प्रमाण को अस्वीकार करने का चार्वाक दार्शनिकों के पास एक तर्क यह भी है कि प्रत्यक्ष समान स्पष्ट नहीं होता है।

## शब्द प्रमाण :→

शब्द-प्रमाण से तात्पर्य है - आप्त वचनों को प्रमाणिक मानते हुए उनके द्वारा प्रस्तुत सत्य को सत्य स्वीकार करना। ऐसे वचन विश्वसनीय महानुभवों या शास्त्रों के भी हो सकते हैं। वैदिक वाक्यों को 'आप्त-वचन' माना गया है।

चार्वाक दर्शन विश्वसनीय व्यक्तियों के वचनों तथा शास्त्रों के वाक्यों को आप्त-वचन मानने से इनकार करता है। उसका तर्क है —

(क) → शब्द द्वारा प्राप्त ज्ञान सदैव सत्य नहीं होता। विश्वसनीय व्यक्ति के कथन भी कभी-कभी असत्य सिद्ध होते हैं। चार्वाक का यह भी कहना है कि सत्यज्ञान देना शब्द का आवश्यक गुण नहीं है। इसलिए शब्द यथार्थज्ञान का साधन नहीं माना जा सकता है।

(ख) → शब्द को स्वतंत्र प्रमाण (ज्ञान का साधन) नहीं कहा जा सकता। क्योंकि यह प्रत्यक्ष पर निर्भर है। जब तक हमें शब्दों का प्रत्यक्ष (देखकर या सुनकर) न हो, तब तक उनके द्वारा ज्ञान नहीं हो सकता। इस प्रकार शब्द प्रत्यक्ष पर आश्रित कहा जा सकता है।

(ग) → चार्वाक नास्तिक दर्शन है क्योंकि वह वेद को नहीं मानता है। इसी कारण वह वैदिक शब्दों को भी यथार्थ ज्ञान के साधन के रूप में अप्रमाणिक सिद्ध किया है। चार्वाक का कहना है कि वेदों में अनेक विरोधपूर्ण, व्यर्थक, अस्पष्ट एवं अबौद्धिक वाक्यों की भरमार है। इस लिए इनसे सत्य ज्ञान की आशा करना व्यर्थ है।

एक श्लोक में चार्वाक दर्शन ने यहाँ तक कह दिया है कि वेद के रचयिता पौरुष-हीन भाण्ड, धूर्त और राक्षस हैं जिन्होंने पैसा कमाने के लिए वेदों की रचना की है। वैदिक ऋषियों ने स्वयं मांस-भक्षण के लिए यज्ञों को आवश्यक बतलाया है। यथा—

'अग्निहोत्रं त्रयोवेदास्त्रिदंडं भस्मगुण्ठनम्।
बुद्धि पौरुष हीनानां जीविकेति बृहस्पतिः॥
त्रयोवेदस्य कर्त्तारो भण्डधूर्त निशाचराः।
जर्भरी तुर्फरीत्यादि पण्डितानां वचः स्मृतम्॥→

(सर्व-दर्शन-संग्रह)

स्पष्ट है कि वेदों और वैदिक ऋषियों पर इतनी कटु अनास्था रखने वाला चार्वाक दर्शन उनके वाक्यों को कदापि शब्द प्रमाण के रूप में नहीं ग्रहण कर सकता था।

इस प्रकार से अनुमान और शब्द प्रमाण का खण्डन करने के बाद चार्वाक उपमान, अर्थापत्ति तथा अनुपलब्धि आदि को अनुमान के ही अंग मानता है क्योंकि ये भी स्वतंत्र रूप से नहीं हो सकते। अतः इन सभी प्रमाणों का खण्डन करके चार्वाक एकमात्र प्रत्यक्ष को ही यथार्थ ज्ञान का साधन सिद्ध करता है। प्रत्यक्ष ही सिर्फ सत्य है बाकि के सभी प्रमाण स्वतंत्र न होकर अनुमान पर आश्रित हैं जो कि स्वयं भी अनिश्चित ज्ञान प्रदान करता है।

———×———